श्री शंकराचार्य और वेदान्त दर्शन

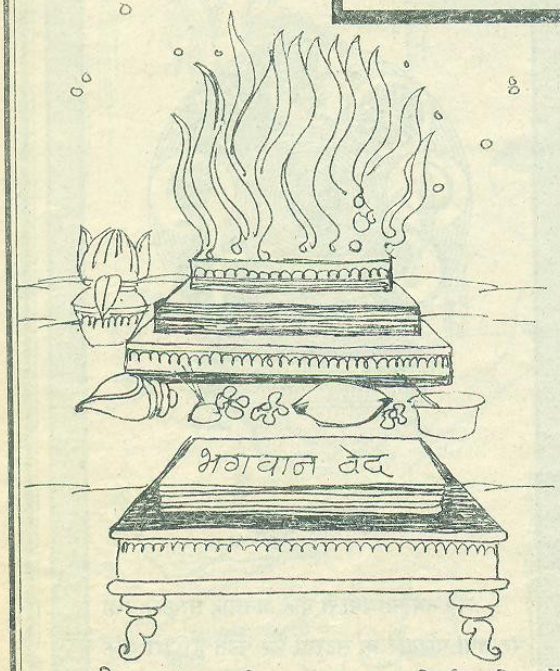

श्री आद्यशंकराचार्य भगवत्पाद का आविर्भाव दक्षिण में केरल देश के कालदी ग्राम में शिवगुरू शर्मा द्रविड की धर्म पत्नी मन्दालसा के गर्भ से हुआ था। इनके जन्म समय के विषय में विद्वानों का मत-भेद है। किन्तु इसमें किसी को सन्देह नही कि इनको बाल्यावस्था में ही वैराग्य हो गया था। जिससे इन्होने गार्हस्थ्य कर्म को मोक्ष मार्ग का अवरोधक मानकर "यदहरेव विरजेत् तरहरेव अव्रजेत्" इस वचनानुसार वैराग्योदय के साथ ही गृह परित्याग करके वे परिव्राजक बन गये, जिससे इन्होने केवल अपना ही उध्दार नही किया अपितु सम्पूर्ण संसार के लिए मुक्तिमार्ग प्रशस्त कर दिया। अपने अद्वैत सिध्दान्त के प्रचार-प्रसार के लिए इन्होने प्रत्येक प्रान्त की यात्रा करके बडी बडी पण्डित सभाओ में शास्त्रार्थ द्वारा प्रतिपक्षियों को परास्त किया एवं अपने सिध्दान्त की स्थापना की थी। साथ ही इन्होने ब्रह्म सूत्रों का अपने मत को प्रतिपादक शंकर भाष्य भी लिखा तथा भगवद्गीता - उपनिषद का भी भाष्य लिखा। इनका ब्रह्मसूत्र का भाष्य शारीरक भाष्य के नाम से भी प्रसिध्द हुआ है।

यद्यपि वेदान्त सिध्दान्त यहाँ भारत वर्ष में बहुत प्राचीन का श्रेय श्री शंकराचार्य एवं उनके अनुयायी विद्वानों के ग्रन्थों को ही प्राप्त हैं।

जिस तरह पूर्वमीमांसा (मीमांसा दर्शन) का आरम्भ " अर्थात धर्म जिज्ञासा " से होता है उस तरह उत्तरमीमांसा (वेतान्तदर्शन) का आरम्भ "अथातो ब्रम्हजिज्ञासा" से होता है। मीमांसा दर्शन में धर्मशब्द से वेदोक्त यज्ञादि कार्यकला लिया गया है। अतः यज्ञादि धर्म का विवेचन और उसकी प्रतिपादक श्रुतियों का तात्पर्यनिर्णय प्रदर्शन ही इस मीमांसाशारक्त का मुख्य विषय है किन्तु वेदान्त दर्शन में मुख्यतया ब्रम्हचिन्तन का विषय प्रतिपादित हुआ है। इस ब्रम्हचिन्तन के कारण ही अन्य दर्शनों की अपेक्षा इसकी प्रमुखता मानी जाती है। वेदान्त यह इसका नाम इसीसे अन्वर्थक है कि इस में वेद के अन्तिम मात्र उपनिषदों के वाक्यों का समन्वय प्रदर्शित किया गया है। अतः इसे औपनिषद दर्शन भी कहते हैं। इस में "सर्व खल्विदं ब्रह्म" "नेह मानास्ति किश्चन", ब्रम्हसत्यं जगन्मिथ्या", जीवो ब्रह्मैव नापरः", ब्रम्हविद ब्रह्मैव भवति" - इत्यादि सिध्दान्त का प्रतिपादन हुआ है। अर्थात - यह सबकुछ ब्रम्हही है, इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नही है। ब्रह्मज्ञान प्राप्त करनेवाला स्वयं ब्रम्हरूप हो जाता है। ब्रम्ह ही सत्य है, संसार तो मिथ्या है" इत्यादि श्रुति स्मृति वाक्यों के आधार पर केवल ब्रम्ह को ही सम्पूर्ण विश्व प्रपंच का कारण माना है। वेदान्त में ब्रम्ह के अतिरिक्त किसी अन्यको स्वीकृत नही किया है। यह अद्वैत वाद ही वेदान्त दर्शन का प्रधान सिध्दान्त है।

आचार्यवर्य श्री शंकराचार्य ने बादरायण प्रणित ब्रम्हसूत्रों (वेदान्तसूत्रों) पर स्वलिखित महत्वपूर्ण शारीरकभाष्य में इसी अद्वैत वाद का प्रतिपादन किया है। इनके मतानुसार ब्रम्हज्ञानी ही संसार से छुटकारा प्राप्त करके कैवल्यमोक्ष का अधिकारी है। किन्तु यह कैवल्य मोक्ष केवल ज्ञान से ही सम्भव है। जैसा कि ब्रम्हसूत्र मे कहा है- "ज्ञा तु कैवल्य" क्योकि अच्छे बुरे सभी तरह के कर्म सांसारिक बन्धन के हेतु हुआ करते हैं। जैसा कि लिखा गया है - "रमणीय चरण रमणीयां योनिमा पद्येरतु कपूयचरणः कपूयां योनिम्- "इति।

"शंकर दिग्विजय" में यह भी पढने को मिला है कि

कुमारिल भट्ट और आद्य शंकराचार्य का एक वार कायाज मे समागम भी हुआ था। कुमारिल भट्ट मीमांसा शास्त्र का उत्कृष्ट विद्वान था इसने मीमांसासूत्रों के शंकर भाष्य की तन्त्र वार्तिक टीका लिखी थी। इसके अनुसार वेदोक्त यज्ञादि कर्मानुष्ठान से ही जीव ब्रम्हज्ञान का =प्राप्तिका=अधिकारी होता है। मीमांसाशास्त्र के सुप्रसिध्द विद्वान आचार्य मण्डलमिश्र आरंभ में इसके ही शिष्य थे किन्तु शास्त्रार्थ मे पराजित होकर वे आद्यशंकराचार्य के शिष्य बन गये।

आद्य शंकराचार्य ने उस समय व्याप्त हो रहे बौध्द मत का उन्मूलन करके वैदिक सनातन धर्म की रक्षा के लिए चारों दिशाओं मे चार मठों की स्थापना की है। दक्षिण में अपनी जन्मभूमि में श्रृंगेरी मठ, पश्चिम में द्वरिका में शारदा मठ, पूर्व मे जगन्नक्षरी मे गोवर्धन मठ और उत्तर मे केदारखंड मे ज्योतिर्मंदिर इन मे दक्षिण के श्रृंङ्गेरी मठ में तोट काचार्य, पश्चिम मठ मे पद्मपादाचार्य, पूर्व के गोवर्धन मठ में हस्तामूल का चारो ओर उत्तर के ज्योतिर्मठ मे सुरेश्वराचार्य इन अपने चार प्रकाण्ड विद्वान शिष्यों को वहॉ का स्वामी बनाकर इनको जगद्गुरू की उपाधि प्रदान की। इन चारो मठाधीशों की गद्दी अव भी जगद्गुरू शंकराचार्य के नाम से ही व्यवहृत है।

■ **नवल किशोर कांकर**
जयपुर (राज.)